शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'पथिक' खण्डकाव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- 'पथिक' खण्ड काव्य में मुनि द्वारा 'कर्मवाद' के सन्दर्भ में दिये गए विचारों पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- श्री रामनरेश त्रिपाठी द्वारा रचित पथिक खण्डकाव्य में मुनि ने कर्मवाद पर विस्तार से प्रकाश डाला है। मुनि ने इस विश्व के नियामक कर्मवाद पर प्रकाश डालते हुए उसे ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त दिखलाया है और सांसारिक जीवन से विरक्त होकर निष्क्रिय बन बैठे पथिक को कर्त्तव्य का उपदेश दिया है। वे कहते हैं कि इस ब्रह्माण्ड में हर किसी का कोई-न-कोई कर्त्तव्य-कर्म सुनिश्चित है, जिसके सम्पादन में वह अविश्राम भाव से लगा हुआ है। उदाहरण के लिए सूर्य और चन्द्रमा को देखा जा सकता है। सूर्य का कर्त्तव्य है अपनी रोशनी से फैलाकर शोभा की सृष्टि करे। अतः आलोक का प्रसार कर शोभावर्धन के कर्त्तव्य-कर्म में नियोजित यह सूर्य चिरन्तर काल से उसे सम्पादित करते आ रहा है। यही हाल चन्द्रमा का भी है। वह सूर्य के तीक्ष्ण प्रकाश को ग्रहणकर उसका ताप हरलेता है और रात्रि के अन्धकार में उसे पुनः चाँदनी की सुधा के रूप में बरसा देता है।

अपने इस कर्म में वह भी स्थापित है जिसके फलस्वरूप संसार को रात्रि में न केवल रोशनी मिलती है, अन्न को भी रस मिलता है। इसी प्रकार अन्य सभी के अपने-अपने कर्म हैं और सभी उसे पूरा करने में लगे भी हैं। इस विश्व में घास जैसी तुच्छ वस्तु के लघु जीवन का कोई-न-कोई उद्देश्य निश्चित है। उदाहरण के लिए, वह वसुन्धरा को हरा-भरा रखता है और उसकी उर्वरता को कायम रखता है। अपने इसी उद्देश्य के पीछे वह अपने कर्म में निरत कोमल तन का विसर्जन भी करता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० मुजफ्फरपुर, पूर्णियाँ

27/09/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० – पत्र

दिगंत-भाग-2 पद्य भाग

शीर्षक :- "तुमुल कोलाहल कलह में"

कवि :- जयशंकर प्रसाद

व्याख्या :-

जहाँ मरु ज्वाला धधकती,
चातकी कन को तरसती;
उन्हीं जीवन घाटियों की,
मैं सरस बरसात रे मन।

प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक से उद्धृत है। इसके कवि छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद जी हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जहाँ मरुभूमि की ज्वाला धधकती है और चातकी जल के कण को तरसती है, उन्हीं जीवन की आशा में मैं सरस बरसात बन जाती हूँ। कवि के कहने का भाव यह है कि जिन लोगों का जीवन मरुस्थल की सूखी घाटी के समान दुर्गम, विषम और ज्वालामय हो गया है, जहाँ चित्त चातकी को एक कण भी सुख का जल नहीं मिला हो उन्हें आशा की एक किरण मात्र मिल जाने से जीवन में रस की वर्षा होने लगती है।

प्रश्न :- बरसात को 'सरस' कहने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर :- बरसात जलों का राजा होता है। बरसात में चारों तरफ जल ही जल दिखाई देता है। पेड़-पौधे हरे-भरे हो जाते हैं। लोग बरसात में आनन्द एवं सुख का अनुभव करते हैं। उनका जीवन सरस हो जाता है अर्थात् जीवन में खुशियाँ आ जाती हैं। खेतों में फसल लहराने लगती हैं। किसानों के लिए यह समय तो और भी खुशियाँ लाने वाला होता है। इसलिए कवि जयशंकर प्रसाद ने बरसात को सरस कहा है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
27/09/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषाहिन्दी, अ०द्वि०–पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक– मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न:– 'निर्मला' उपन्यास की विषयवस्तु के औपन्यासिक गठन की समीक्षा– शेष भाग।

उत्तर:– मंसाराम की मृत्यु मुंशी तोताराम के सन्देह को दूर कर देती है। वे पश्चाताप से भर जाते हैं। वे मंसाराम के प्रति निर्मला के विशुद्ध वात्सल्य को पहचान लेते हैं। पुत्रशोक में मुंशी तोताराम की हालत बिगड़ती चली जाती है। साथ ही साथ उनकी वकालत का पेशा भी मन्द होती जा रही है।

इसी बीच में सुधा और उसके पति डॉक्टर भुवन-मोहन सिन्हा की कथा प्रारम्भ हो जाती है। डॉक्टर सिन्हा वही हैं, जिनसे निर्मला के विवाह की बात-चीत पक्की होकर टूट ~~गई थी~~ गई थी। सुधा निर्मला की सारी करुणा गाथा सुनकर काफी चिंतित हो जाती है। वह अपने देवर का विवाह निर्मला की छोटी बहिन कृष्णा से करा देती है। निर्मला को लड़की होती है और सुधा को लड़का। मुंशी तोताराम निर्मला की पुत्री में अपने खोये हुए पुत्र को पाना चाहते हैं।

उपन्यास में पुनः नाटकीय मोड़ उपस्थित होता है। सुधा के पुत्र की मृत्यु हो जाती है। निर्मला मायके से अपने घर आ जाती है। मुंशी तोताराम के दोनों पुत्र इतने अधिक उच्छृंखल हो जाते हैं कि उनसे वे लड़ने लगते हैं। निर्मला के आते ही घर में द्वन्द्व और अधिक बढ़ जाता है। मुंशी तोताराम की वकालत से आय और कम हो जाती है। अतः निर्मला गृहस्थी का खर्च पूरा करने और पुत्री के भविष्य की चिंता में कंजूसी करना शुरू कर देती है।

मुंशी तोताराम के लड़कों की उच्छृंखलता बढ़ती चली जाती है। जियाराम एक दिन निर्मला के आभूषणों की पेटी चुरा लेता है। पुलिस में रिपोर्ट होती है, जियाराम पकड़ा जाता है। निर्मला पुलिस को रिश्वत देकर मामला ~~क~~ रफा-दफा करने के लिए पति को

शेष आगे-

भेजती है। इसी बीच जियाराम जहर खाकर आत्महत्या कर लेता है। इस घटना से निर्मला में कठोरता चली आ जाती है। वह सियाराम को ताड़ना देने लगती है। सियाराम घर से ऊब कर साधु हो जाता है। मुंशी-तोताराम उसकी खोज में निकल पड़ते हैं। शेष अगले कक्षा में।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

27/03/20